35

301hi35A

संचार माध्यम और उनके प्रकार

आजकल मीडिया शब्द का खूब प्रयोग होने लगा है। आम बोलचाल में भी लोग इसका इस्तेमाल करने लगे हैं। आपने भी जरूर सुना होगा। क्या आप बता सकते हैं कि आखिर मीडिया है क्या? जी, अखबार, रेडियो, टेलीविजन, फोन, इंटरनेट आदि को मीडिया की श्रेणी में रखा जाता है। मीडिया यानी संचार माध्यम। क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि संचार माध्यमों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? आइए, इस पाठ में हम संचार माध्यमों के बारे में जानते हैं। ये कितने प्रकार के होते हैं और हमारे लिए इनकी क्या उपयोगिता है, समझते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- संचार माध्यमों का महत्त्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- संचार माध्यम के प्रकार बता सकेंगे;
- समाचारपत्रों की उपयोगिता का उल्लेख कर सकेंगे;
- नए संचार माध्यमों जैसे इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि की विशेषताएँ बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

1. आप हर दिन नई-नई सूचनाएँ प्राप्त करते हैं। क्या बता सकते हैं कि हम तक सूचनाएँ या समाचार कैसे पहुँचते हैं। इन्हें पहुँचाने वाले कौन-कौन से माध्यम हैं? उनमें से किन्हीं चार के नाम लिखिए–

   1. ..... 2. .....

   3. ..... 4. .....

टिप्पणी

2. आप अखबार पढ़ते हैं, रेडियो भी सुनते हैं। अखबार और रेडियो के समाचारों में क्या अंतर होता है, संक्षेप में लिखिए–

.....

.....

.....

.....

.....

35.1 आइए समझें

संचार माध्यम का महत्त्व

किसी भी सूचना, विचार या भाव को दूसरों तक पहुँचाना ही मोटे तौर पर संचार या कम्युनिकेशन कहलाता है। एक साथ लाखों-करोड़ों लोगों तक एक सूचना को पहुँचाना ही संचार या जनसंचार या मास कम्युनिकेशन मीडिया कहलाता है। मानव सभ्यता के विकास में संचार की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। वैसे तो सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य किसी न किसी रूप में संचार करता रहा है। जब आज की तरह टेलीफोन, इंटरनेट आदि की सुविधाएँ नहीं थीं, तब लोग चिट्ठी लिख कर अपना हाल-समाचार लोगों तक पहुँचाते और दूसरों का समाचार जानते थे। आपको यह जान कर हैरानी होगी कि चिट्ठी लिखने का प्रचलन भी बहुत पुराना नहीं है। जब डाक व्यवस्था नहीं थी तब लोग संदेश भेजने वालों जिन्हें संवदिया कहा जाता था, के माध्यम से एक गाँव से दूसरे गाँव तक संदेश भेजते या मँगाते थे।

पुराने समय में राजा के हरकारे पैदल या घोड़े की सवारी करते हुए राजा के संदेश राजधानी से दूसरी जगहों पर ले जाते और वहाँ से ले आते थे। आपने यह भी कई कहानियों में सुना होगा कि लोग कबूतरों के ज़रिए अपना संदेश भेजा करते थे। यही व्यवस्था बाद में एक सरकारी विभाग डाक-विभाग-बनाकर सबके लिए सुलभ कर दी गई थी। अब हर कोई एक निश्चित शुल्क देकर अपना संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से भेज सकता है। अब तो डाक व्यवस्था में इतने आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल किया जाने लगा है कि संदेश तार के ज़रिए पलक झपकते एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचा दिया जाता है। क्या आप जानते हैं कि तार जिस मशीन से भेजा जाता है उसका ही विकसित रूप टेलीप्रिंटर कहा जाता है। इसके अलावा फैक्स, ई-मेल के ज़रिए पलक झपकते सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जा सकता है। इन उपकरणों के आ जाने से सिर्फ़ डाक प्रणाली में नहीं बल्कि संचार माध्यमों को सूचनाएँ इकट्ठी करने और प्रसारित करने में भी काफ़ी सुविधा हुई है। इन उपकरणों के बारे में हम पहले पढ़ चुके हैं।

संचार का अर्थ सिर्फ़ व्यक्ति का अपना हाल-समाचार दूसरों तक पहुँचाने तक सीमित नहीं है। हर व्यक्ति अपने या अपने संबंधियों की सूचनाएँ जानने के अलावा देश-दुनिया की खबरों के बारे में जानने का इच्छुक होता है। उसके आस-पास क्या हो रहा है,

टिप्पणी

दुनिया में कहाँ क्या घटना घट रही है, सबकी जानकारी प्राप्त करना चाहता है। सूचनाओं की इसी भूख के चलते संचार माध्यमों का लगातार विकास और विस्तार होता गया। आज अमेरिका में राष्ट्रपति का चुनाव होता है या ईराक में लड़ाई छिड़ती है तो हर किसी की निगाह उस ओर लगी रहती है कि वहाँ क्या हो रहा है। वह हर पल की खबरें जानना चाहता है। अगर आस्ट्रेलिया में क्रिकेट मैच हो रहा होता है तो आपकी जिज्ञासा लगातार बनी रहती है कि किस टीम की क्या स्थिति चल रही है। इसी तरह तो लोग व्यवसाय या किसी व्यापार से जुड़े हैं या शिक्षा संबंधी जानकारी चाहते हैं उनके लिए भी हर पल बाजार में वस्तुओं की कीमतों और शेयरों के उतार-चढ़ाव की खबरें जानना ज़रूरी होता है, दुनिया में शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे प्रयोगों के बारे में जानने की जिज्ञासा रहती है। किसानों को मौसम और खेती में इस्तेमाल होने वाली नई तकनीक की जानकारी काफ़ी मददगार साबित होती है। ज़रा सोचिए, अगर, अखबार, रेडियो, दूरदर्शन, मोबाइल जैसे संचार माध्यम न होते तो क्या ये सूचनाएँ आप तक पहुँच पातीं।

अब संचार की बढ़ती जरूरतों को देखते हुए तरह-तरह के संचार माध्यमों का विकास कर लिया गया है। जल्दी-से-जल्दी सूचनाएँ पहुँचाने की दुनिया भर में होड़ लगी हुई है। पहले निर्धारित समय पर और एक निश्चित समय के लिए समाचारों का प्रसारण हुआ करता था, अब चौबीसों घंटे देश दुनिया की खबरों के प्रसारण लगातार दूरदर्शन के चैनलों में चलते रहते हैं। आप में से बहुत से लोगों को शायद यह जानकारी भी हो कि जल्दी-से-जल्दी सूचनाएँ पहुँचाने के लिए संचार माध्यम क्या उपाय करते हैं, कई लोगों के लिए यह जानना अभी भी काफ़ी रोचक होगा।

35.2 संचार माध्यमों के उद्देश्य

आपने अभी जाना कि विचारों, भावों और सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना ही संचार माध्यम का मुख्य काम होता है आप यह भी जान चुके हैं कि संचार माध्यमों में समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन आदि का महत्त्व बहुत अधिक है जिस कारण इन से जुड़ा प्रेस वर्ग यानी पत्रकार वर्ग आज चौथा खंभा के नाम से जाना जाता है। पत्रकारिता की दुनिया को चौथी दुनिया (Fourth Estate) की संज्ञा दी गई है। संचार माध्यमों के मोटे तौर पर तीन उद्देश्य माने जा सकते हैं–

- सूचना पहुँचाना
- मनोरंजन और
- शिक्षा

हालांकि यह माना जाता है कि संचार माध्यम का मुख्य उद्देश्य सूचनाएँ पहुँचाना होता है लेकिन जब आप रेडियो सुनते हैं या टेलीविजन देखते हैं तो उसमें कार्यक्रमों का बहुत बड़ा हिस्सा मनोरंजन को ध्यान में रख कर प्रसारित किया जाता है। ज़रा सोचिए, रेडियो पर अगर चौबीसों घंटे सिर्फ समाचार प्रसारित किए जाएँ तो आप उसे कितनी देर सुनेंगे। या इसके उलट अगर केवल उस पर गाने प्रसारित किए जाएँ तो

टिप्पणी

कभी-न-कभी आपको ऐसा ज़रूर लगेगा कि कुछ समाचार प्रसारित किए जाते या देश-दुनिया से जुड़ी जानकारियाँ प्रसारित की जातीं तो कितना अच्छा होता! क्योंकि कोई भी व्यक्ति मात्र मनोरंजन, जानकारी या समाचार से संतुष्ट नहीं होता। इन तीनों के प्रति उसमें सहज जिज्ञासा होती है।

आजकल टेलीविज़न पर इन तीनों के लिए अलग-अलग चैनल शुरू हो गए हैं। अगर आपको समाचार सुनने हैं तो आप समाचार का चैनल ट्यून करते हैं, फिल्म देखनी है तो उसके चैनल पर जाते हैं या मनोरंजन चाहिए तो उसके लिए कई दूसरे चैनल हैं।

सूचना का अर्थ आमतौर पर समाचार लगाया जाता है। यह काफ़ी हद तक सही भी है, क्योंकि समाचारों का विस्तार आज सिर्फ राजनीतिक क्षेत्र तक न होकर समाज के हर क्षेत्र तक हो चुका है। जब आप कोई अखबार पढ़ते हैं या समाचार का कोई चैनल देखते हैं तो उसमें राजनीतिक हलचलों के अलावा खेल, शिक्षा, कृषि, बाजार भाव, शेयर, अर्थ, स्वास्थ्य जगत, अपराध, मौसम आदि की जानकारियाँ भी प्रकाशित-प्रसारित की जाती हैं। बल्कि अखबारों में विज्ञापनों के माध्यम से कंपनियाँ अपने उत्पाद अथवा सेवाओं के बारे में उपभोक्ताओं को विविध प्रकार की सूचनाएँ भी देती रहती हैं। ज़रा सोचिए आपको यह सूचना कहाँ से और किस प्रकार मिली कि नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के ज़रिए मुक्त शिक्षा माध्यम से आप बारहवीं की परीक्षा भी दे सकते हैं। इसी तरह अगर आपको कोई सामान खरीदना है और वह सामान कई कंपनियाँ बनाती हैं। आपको ठीक से जानकारी नहीं है कि किस कंपनी का सामान खरीदना आपके लिए ठीक रहेगा। ऐसे में आपको अगर अखबार में या टेलीविज़न पर विज्ञापन के ज़रिए उस वस्तु के बारे में जानकारी मिल जाती है तो आपको खरीदारी में आसानी हो जाती है। इसी तरह नौकरियों के विज्ञापन भी संचार माध्यमों के ज़रिए आपको मिलते रहते हैं। इसके अलावा जनसंख्या नियंत्रण, एड्स के प्रति जागरूकता, बाल विवाह के कुप्रभाव, नशे से समाज और मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव, पर्यावरण प्रदूषण, जल संचय आदि समस्याओं के प्रति लोगों में जागरूकता लाने और उन्हें इनमें सहभागिता निभाने के लिए प्रेरित करने संबंधी अनेक सूचनाएँ संचार माध्यमों के जरिए प्राप्त होती हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है संचार माध्यम सूचनाओं का एक सशक्त माध्यम होते हैं।

कुछ दिनों पहले भारत सरकार ने अंतरिक्ष में एजूसेट नामक उपग्रह स्थापित किया। इस उपग्रह का मक़सद दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थियों-शिक्षार्थियों को लाभ पहुँचाना है। आप तो जानते हैं कि मुक्त शिक्षा माध्यम से पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों को मुद्रित सामग्री के अलावा रेडियो, टेलीविज़न, टेलीफोन आदि के माध्यम से भी पाठ्यक्रम सहायक सामग्री और शिक्षा से संबंधित जानकारियाँ उपलब्ध कराई जाती हैं। अभी तक इस तरह की जानकारियाँ दूसरे उपग्रहों के माध्यम से उपलब्ध कराई जाती थीं, लेकिन एजूसेट के स्थापित हो जाने के बाद शिक्षा के लिए स्वतंत्र उपग्रह अस्तित्व में आ गया है और शिक्षा संबंधी सामग्री के प्रसारण में काफ़ी सुविधा हो गई है।

आप यह भी जानते हैं कि अब ज़्यादातर रेडियो और टेलीविज़न कार्यक्रम उपग्रह के माध्यम से प्रसारित किए जाते हैं। अब समाचार पत्रों के प्रकाशन और उनकी सूचनाओं का संग्रह भी उपग्रह के माध्यम से होने लगा है। इस बारे में आप इन पाठों में विस्तार से पढ़ेंगे।

पाठगत प्रश्न 35.1

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प छाँट कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. निम्नलिखित में से संचार माध्यम किसमें उपयोगी नहीं है–
   (क) मनोरंजन में (ग) पानी बरसाने में
   (ख) सूचनाओं के प्रसारण में (घ) शिक्षा सामग्री एकत्र करने में
2. संचार माध्यमों के विस्तार में इनमें से कौन-सा कारण प्रमुख रहा है–
   (क) लोगों का कृषि के प्रति झुकाव
   (ख) लोगों का पढ़ाई-लिखाई के प्रति झुकाव
   (ग) आधुनिक उपकरणों का आविष्कार
   (घ) लोगों में सूचनाओं की बढ़ती भूख
3. एजूसेट उपयोगी है –
   (क) मनोरंजन के क्षेत्र में (ग) शिक्षा के क्षेत्र में
   (ख) अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्र में (घ) गरीबी उन्मूलन में

35.3 संचार माध्यम के प्रकार और उनकी उपयोगिता

आप में से काफ़ी लोग अखबार पढ़ते हैं, रेडियो सुनते और टेलीविज़न देखते हैं। ये सभी संचार माध्यम हैं। लेकिन इनके अलावा भी कई ऐसे माध्यम हैं जिनके द्वारा सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इन माध्यमों में 'इंटरनेट' सबसे नया और सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कंपनियों, विभागों द्वारा मुहैया कराए जाने वाली प्रचार सामग्री भी संचार का माध्यम साबित हुई है। मगर कुल मिलाकर संचार माध्यमों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

1. मुद्रित माध्यम
2. श्रव्य माध्यम
3. दृश्य-श्रव्य माध्यम

1. मुद्रित माध्यम

मुद्रित संचार माध्यम में मुख्यरूप से अखबार और पत्रिकाएँ आती हैं। आप तो जानते हैं कि अखबारों में मुख्य रूप से समाचार प्रकाशित होते हैं। इन जानकारियों में शिक्षा से लेकर खेती-बाड़ी, खेल-कूद, बाजार भाव, सिनेमा, स्वास्थ्य तथा पोषण, टेलीविज़न के कार्यक्रम, फैशन, ज्योतिष भविष्यफल और दुनिया के विभिन्न स्थानों, वहाँ के लोगों और उनके रहन-सहन के बारे में भी जानकारियाँ प्रकाशित होती हैं। देश-दुनिया की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक हलचलों के विश्लेषण तो प्रकाशित होते ही हैं।

अखबार चूँकि हर दिन प्रकाशित होते हैं इसलिए इनमें रोज़ की विभिन्न क्षेत्रों की ताजा खबरें प्रमुखता से प्रकाशित होती हैं। इसलिए इन्हें समाचार पत्र कहा जाता है। दुनिया भर में चूँकि हर क्षेत्र में हर पल कोई-न-कोई नई घटना घटती है और उनमें से हर क्षेत्र की जानकारी हर कोई पाना चाहता है इसलिए हर अखबार अपने-अपने तरीके से खबरों के लिए अलग-अलग पन्ने निर्धारित करता है। आपने अखबार पढ़ते हुए देखा होगा कि आमतौर पर पहले पन्ने पर देश-दुनिया की सबसे महत्त्वपूर्ण खबरें प्रकाशित होती हैं, जैसे प्रधानमंत्री की किसी योजना की घोषणा, कोई महत्त्वपूर्ण फैसला या दुनिया के किसी देश में हुई कोई बहुत महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना। इसी तरह ज़्यादातर अखबारों में आखिरी पन्ने पर खेल, दूसरे पन्ने पर स्थानीय खबरें और आखिर के दूसरे पन्ने पर अर्थ जगत से जुड़ी खबरें होती हैं। इसके अलावा देश-विदेश की खबरों के लिए अलग से पन्ने निर्धारित किए जाते हैं और संपादकीय के लिए आमतौर पर बीच का पन्ना निश्चित होता है।

चित्र 35.1: तरह-तरह के अखबार

इसमें हर अखबार अपने आकार के मुताबिक अलग-अलग क्षेत्रों की खबरों के लिए पन्नों की संख्या अलग-अलग निर्धारित करता है। किसी अखबार में स्थानीय खबरों के लिए दो पन्ने होते हैं तो किसी में इससे अधिक। कुछ अखबार राज्यवार खबरें भी प्रकाशित करते हैं। इसके अलावा सप्ताह के अलग-अलग दिन अलग-अलग विषयों पर विशेष परिशिष्ट देने का भी प्रचलन कुछ समय से बढ़ा है। अखबार में खबरों को क्षेत्रवार प्रकाशित करने और उनके लिए अलग-अलग पन्ने निर्धारित करने के पीछे पाठकों को पढ़ने में सुविधा का ध्यान रखा जाना ही मुख्य उद्देश्य होता है।

इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है, मान लीजिए आप अखबार रोज पढ़ते हैं पर ऐसे में अगर आपको पता है कि इस तरह की खबरें जो अखबार आप पढ़ते हैं उसमें किस पन्ने पर छपती हैं तो बजाय पूरे अखबार में से वैसी खबरों को तलाशने के आप सबसे पहले वही पृष्ठ खोल कर पढ़ते हैं। इसी तरह अगर आपके किसी मित्र को खेल में रुचि है तो वह खेल का पन्ना खोलता है और उसे खेल से जुड़ी सारी खबरें एक जगह मिल जाती हैं। इस तरह पूरे अखबार में से अपनी रुचि के समाचार छाँटना आसान हो जाता है। वैसे ही अगर आप विद्यार्थी हैं और आपको पता है कि आपके अखबार में सप्ताह में एक दिन सेहत, डाक्टर की सलाह, किशोर शिक्षा, पढ़ाई-लिखाई और रोज़गार से जुड़े अवसरों के बारे में अलग-अलग दिन परिशिष्ट प्रकाशित होता है। वह किस दिन और किस पृष्ठ पर प्रकाशित होता है, पता होने से आप झट से वह पृष्ठ खोलते हैं और अपने काम की सूचनाएँ निकाल लेते हैं।

चित्र 35.2: अखबारों की उपयोगिता

टिप्पणी

हर अखबार रविवार को अलग से परिशिष्ट प्रकाशित करता है, जिसमें समाचारों से अलग हट कर समाज के विविध पक्षों पर जानकारियाँ दी जाती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को विविध विषयों के बारे में जानकारी प्रदान करना, उनका मनोरंजन करना और जागरूक बनाना होता है। इसमें आमतौर पर सामाजिक मुद्दों से जुड़े विषय उठाए जाते हैं। इनमें साहित्य भी होता है, फैशन भी होता है, कला के क्षेत्र व महिलाओं व किशोरों से जुड़ी जानकारियाँ और बच्चों के लिए गतिविधियाँ भी होती हैं। इनमें मुख्य रूप से फीचर प्रकाशित होते हैं। फीचर के बारे में तो आप आगे पढ़ेंगे।

अखबार की उपयोगिता

अखबार को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है। तीन खंभों के बारे में तो आप जानते ही हैं। ये हैं पहला विधायिका यानी संसद और विधानसभाएँ दूसरा कार्यपालिका यानी नौकरशाही और तीसरा न्यायपालिका यानी अदालतें। निम्नलिखित वर्गीकरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

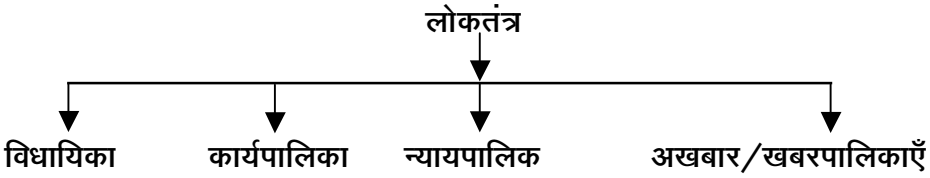

लोकतंत्र का चौथा खंभा यानी खबरपालिका कहा गया है। इसे संविधान में यह दर्जा प्राप्त नहीं है, बल्कि इसे लोगों ने चौथा खंभा मान लिया है। ऐसा इसलिए कि विधानपालिका कानून बनाती है, कार्यपालिका उसे लागू करती है और न्यायपालिका उसे तोड़ने वालों को दंडित करती है, लेकिन अखबार अक्सर विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में होने वाली गड़बड़ियों को उजागर करने का काम करता है, लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाता है। सरकार के फैसलों पर टिप्पणियाँ करता है और नौकरशाही के ढीलमढाल रवैए पर उँगली उठाता है। इस तरह कई बार न्यायपालिका को कानून पर नज़र रखने में मदद पहुँचाता है, सरकार को अपने फैसलों पर दुबारा विचार करने पर मजबूर करता है, नौकरशाही को मुस्तैद बनाता है। आपने अक्सर पढ़ा-सुना होगा कि अखबार में खबरें प्रकाशित होने के बाद कई सामाजिक मुद्दों पर सरकार या न्यायपालिका का ध्यान गया और उसने तुरंत उस पर कार्रवाई की। सरकार ने किसी योजना की घोषणा की पर अखबार ने उसकी खामियों पर सवाल उठाया या उसके पूरा न हो पाने पर खबर छापी तो सरकार को तुरंत नया फैसला करना पड़ा। इस तरह अखबार लोगों को खबरदार करता है और लोकतंत्र की रक्षा करता है। इसीलिए संविधान में प्रेस को स्वतंत्रता दी गई है। सरकार उसकी आज़ादी को बाधित करने की कोशिश नहीं कर सकती। क्या आपने इस बात पर कभी विचार किया है कि प्रेस नहीं होती तो क्या सचमुच लोकतंत्र की रक्षा हो पाती। क्या आप अपने अधिकारों के प्रति इतने सजग हो पाते। सरकार या नौकरशाही के फैसले आपके हक में कितने सही या गलत हैं, आप ठीक-ठीक आकलन कर पाते, इनके खिलाफ सरकार पर दबाव बन पाता। लेकिन अखबार केवल सरकारी फैसलों, योजनाओं, नीतियों या कामकाज के तरीकों की तरफ़ ही लोगों का

टिप्पणी

ध्यान आकर्षित नहीं करता बल्कि समाज के दूसरे विभिन्न मुद्दों पर भी लोगों को जागरूक बनाता है। शायद आपको पता हो, आज जिस पर्यावरण प्रदूषण को लेकर इतने आंदोलन चल रहे हैं, सबसे पहले इसकी तरफ़ लोगों का ध्यान अखबार में प्रकाशित खबर को पढ़ कर ही गया था। जब अखबार में समाचार छपा कि वाहनों के धुँए, वनों के कटने और प्राकृतिक संपदा के दोहन से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है तो इसकी रोकथाम के लिए अदालत ने सरकार को निर्देश जारी किया था। इसी तरह बढ़ती जनसंख्या, लिंग भेद, भ्रूण हत्या जैसे अनेक सामाजिक मुद्दों पर अखबार अपनी नज़र रखता है और लोगों को जागरूक बनाने की कोशिश करता है। वह देश के अलावा दूसरे देशों की गतिविधियों पर भी नज़र रखता है और उनका अपने देश पर पड़ने वाले प्रभावों से लोगों को अवगत कराता है। आप संपादकीय पन्ने पर छपने वाली टिप्पणियों को पढ़कर बहुत सारे मुद्दों पर पक्ष और विपक्ष में विचारों से अवगत होते होंगे और एक निष्कर्ष पर पहुँचते होंगे। सही और गलत का निर्धारण कर पाते होंगे।

इसके अलावा अखबार लोगों को अपने विचार रखने का एक खुला मंच भी प्रदान करता है। अखबार के ज़रिए न सिर्फ़ आप देश-दुनिया की हलचलों से परिचित होते हैं, उनमें प्रकाशित टिप्पणियों से राय बनाते हैं बल्कि अखबार आपको अपने विचार प्रकट करने का अवसर भी देते हैं। किसी मुद्दे पर आप सहमत या असहमत हैं तो लेख लिख कर या पत्रों के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं, सीधे सरकार को संबोधित कर सकते हैं। आपके आस-पास कोई समस्या नज़र आती है तो अखबार के ज़रिए उसे लोगों के सामने ला सकते हैं। अखबारों में अक्सर अलग-अलग मुद्दों, समस्याओं पर लोगों की लंबी बहस आयोजित होती है, लोगों की राय या प्रतिक्रिया भी प्रकाशित होती है। इस तरह अखबार सिर्फ़ अपने तरीके से विचारों या समाचारों को नहीं प्रकाशित करते बल्कि आम लोगों को साथ लेकर चलते हैं, उनके विचारों, समस्याओं और प्रतिक्रियाओं को भी प्रस्तुत करते हैं। क्या आपको नहीं लगता कि अखबार लोकतंत्र में जरूरी हैं!

आपने पढ़ाः

1. अखबार को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है।
2. अखबार खबरपालक का कार्य करते हुए लोकतंत्र की रक्षा करता है।
3. आपको अधिकारों के प्रति सजग करता है।
4. अखबार हर मुद्दे पर प्रहरी की भाँति पैनी नज़र रखता है।
5. अखबार विचार रखने का खुला मंच है।

पत्रिकाएँ

पत्रिकाओं का प्रकाशन सर्वाधिक होता है। ये अखबारों की तरह रोज़ नहीं प्रकाशित होतीं बल्कि साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, छमाही या वार्षिक आधार पर प्रकाशित होती हैं। सावधिक होने की वजह से पत्रिकाओं में ताज़ा सूचनाएँ देने की गुंजाइश कम होती है। इसलिए ज़्यादातर पत्रिकाओं में घटनाओं, समाचारों, सामाजिक-साहित्यिक और कला जगत की हलचलों पर विस्तार से वैचारिक टिप्पणियाँ

टिप्पणी

प्रकाशित की जाती हैं। इन्हें पढ़ने का लाभ यह होता है कि सूचनाओं से लगातार रू-ब-रू होते लोगों को उन पर प्रतिक्रियाएँ जानने, उनकी तह में छिपी वास्तविक को जानने, घटना को विस्तार से समझने का मौका मिलता है।

पत्रिकाएँ चूँकि सावधिक होती हैं, इसलिए इनमें ताज़ा घटनाक्रम का प्रकाशन संभव नहीं होता, दूसरे इनका अगले अंक के प्रकाशन तक इंतज़ार करना पड़ता है। इस अर्थ में पत्रिकाओं में सूचनाएँ देर से अवश्य पहुँचती हैं, मगर इनकी अवधि समाचार पत्रों की अपेक्षा थोड़ी लंबी होती है। समाचार पत्र अगर एक दिन में पूरा नहीं पढ़ा गया तो दूसरे दिन नया पत्र आ जाता है। पर, पत्रिकाओं को एक दिन में नहीं भी पढ़ा जा सका तो दो-तीन दिन में आराम से पढ़ा जा सकता है। इनके सावधिक होने का लाभ यह होता है कि सूचनाओं के विस्तार से प्रकाशन तथा विवेचन की सुविधा होती है। दैनिक अखबार की तरह चूँकि इन्हें प्रकाशित करने की जल्दी नहीं होती इसलिए खबरों की तह में जाने का समय इन्हें ज़्यादा मिल जाता है। इसीलिए कई बार पत्रिकाएँ खबरों की तह में छिपी घटनाओं को भी ढूँढ़ कर ले आती हैं। ऐसे कई उदाहरण आपके सामने आते होंगे।

कुल मिलाकर पत्र-पत्रिकाएँ सूचनाओं का तेज़ी से और प्रामाणिक तौर पर प्रकाशन कर पाते हैं और इससे लोगों को न सिर्फ़ सरकार की योजनाओं, नीतियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है बल्कि जागरूकता भी पैदा होती है। इसमें समाचारों के ज़रिए तो आम आदमी में जागरूकता बढ़ती ही है, विज्ञापनों या सरकारी सूचनाओं के ज़रिए भी बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं, जिन्हें काट कर लंबे समय तक दस्तावेज़ के रूप में सहेजा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 35.2

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. निम्नलिखित में से सही कथन छाँटिए:
   (क) अखबार सावधिक होते हैं।
   (ख) पत्रिकाओं में मुख्य रूप से समाचारों का विश्लेषण प्रकाशित किया जाता है।
   (ग) अखबार लोगों को जागरूक बनाते हैं।
   (घ) पत्रिकाएँ अखबारों की अपेक्षा ज़्यादा समय तक टिकाऊ होती हैं।
   (च) पत्रिकाओं और अखबारों की खबरों की प्रकृति लगभग एक-सी होती हैं।

2. लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है –
   (क) विधायिका को (ग) कार्यपालिका को
   (ख) न्यायपालिका को (घ) मीडिया को

2. श्रव्य माध्यम

श्रव्य माध्यमों के ज़रिए सूचनाओं का प्रसारण किया जाता है, जिन्हें सिर्फ़ सुना जा सकता है। मुद्रित माध्यमों की तरह इनकी सूचनाओं को पढ़ा या इनसे जुड़ी घटनाओं

टिप्पणी

के चित्रों को देखा नहीं जा सकता। रेडियो एक श्रव्य माध्यम है। आप पत्र-पत्रिकाओं और रेडियो की सूचनाओं या समाचारों में अंतर महसूस करते होंगे। रेडियो में भी समाचार, विज्ञापन, सूचनाओं आदि का प्रसारण किया जाता है, मगर इनकी विशेषता यह होती है कि मुद्रित माध्यमों के ज़रिए प्रकाशित सूचनाओं का लाभ सिर्फ़ साक्षर व्यक्ति ही उठा पाता है, मगर रेडियो अथवा श्रव्य माध्यम की सूचनाओं का लाभ कम पढ़े-लिखे या निरक्षर व्यक्ति भी उठा सकते हैं। दूसरे इसमें मुद्रित माध्यमों की तरह इसका लाभ उठाने के लिए रोज़ पैसे खर्च करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। रेडियो सेट एक बार खरीद लेने के बाद लंबे समय तक इसके माध्यम से सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इसके अलावा इसे कहीं भी उठा कर ले जाया जा सकता है जैसे खेत में काम करते समय किसान खेत में, फैक्टरी में काम करने वाला मजदूर फैक्टरी में काम करते हुए या ड्राइवर गाड़ी चलाते हुए भी इसे सुन सकता है। पत्र-पत्रिकाओं की तरह इसकी सूचनाओं का लाभ उठाने के लिए दूसरे काम छोड़ने की ज़रूरत नहीं होती।

रेडियो की पहुँच और प्रभाव अखबार से अधिक है, क्योंकि निरक्षर भी इसका लाभ उठा सकते हैं। रेडियो पर आजकल एफ.एम. चैनल ज्ञानवाणी के ज़रिए विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम पर आधारित कार्यक्रम भी प्रसारित होते हैं। इससे जो विद्यार्थी कक्षा में नहीं जा पाते, कोई दूसरा काम करते हैं, वे भी लाभ उठा सकते हैं। ये कार्यक्रम इतने रोचक और ज्ञानवर्धक होते हैं कि पुस्तकें पढ़ते समय जो परेशानियाँ आपको महसूस होती हैं, इन कार्यक्रमों को सुनने से आसानी से समझ आ जाती हैं। आपने भी क्या ऐसा महसूस किया? पुस्तकों में प्रकाशित सामग्री को पढ़ने में ये सहायक हैं या नहीं?

रेडियो में भी लगभग वही सभी प्रमुख समाचार, सूचनाएँ होती हैं जो पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती हैं। मगर इनमें अंतर केवल इतना होता है कि रेडियो में समाचारों-सूचनाओं के लिए समय निर्धारित होने के कारण इनके विस्तार की गुंजाइश कम होती है। इनमें विशेष रूप से प्रमुख समाचार ही प्रसारित हो पाते हैं, जबकि अखबारों में स्थानीय और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय खबरों के लिए काफ़ी जगह बन जाती है। साथ ही इनमें घटनाओं के चित्र भी प्रकाशित किए जा सकते हैं, जोकि रेडियो में संभव नहीं हैं। इनकी सूचनाओं या समाचारों को अखबार-पत्रिकाओं की सूचनाओं-समाचारों की तरह काट कर लंबे समय तक रख पाना संभव नहीं है। दूसरे, इसमें प्रसारित होने वाले समाचारों को ध्यान से न सुना जाए तो जो समाचार छूट जाते हैं उन्हें अखबार की तरह दुबारा पढ़ कर समझना संभव नहीं होता। अगले प्रसारण तक इंतजार करना पड़ता है। इसके अलावा इसमें समाचारों के लिए समय निर्धारित होने के कारण समय पर रेडियो खोलना ज़रूरी होता है। अखबार में यह सुविधा होती है कि जब मर्जी पढ़ा जा सकता है, रेडियो की तरह इसमें समय की कोई पाबंदी नहीं होती।

रेडियो के अलावा श्रव्य माध्यम के रूप में इन दिनों टेपरिकॉर्डर का भी प्रचलन तेजी से बढ़ा है। इसमें सूचनाओं को रिकार्ड करके रखा जा सकता है, जिसे जब मर्जी सुना जा सकता है। यह माध्यम विद्यार्थियों के लिए काफी उपयोगी साबित हो रहा है। आप भी इस माध्यम का लाभ उठाते होंगे। पाठ्यपुस्तकों के अलावा दूर शिक्षा प्रणाली के

टिप्पणी

ज़रिए शिक्षा प्रदान कराने वाले संस्थान ऑडियो कैसेट भी देते हैं, जिनमें पाठ्यक्रम के अलावा कई पाठ्यक्रम सहायक सामग्री उपलब्ध होती है। इन कैसेटों को आप अपनी सुविधा के अनुसार सुन कर लाभ उठा सकते हैं।

चुनावों के दौरान राजनीतिक पार्टियाँ भी अपने प्रचार-प्रसार के लिए ऑडियो कैसेट का इस्तेमाल करने लगी हैं। कई कंपनियाँ अपने विज्ञापनों का प्रसारण इसके ज़रिए करती हैं। जो लोग कस्बों में रहते हैं उन्होंने सिनेमा का प्रचार करने वाले वाहनों को लाउडस्पीकरों पर प्रचार करते देखा होगा। महानगरों में लाल बत्तियों पर ट्रैफिक पुलिस का प्रचार प्रसारित होते सुना होगा। लाउडस्पीकर भी संचार का एक श्रव्य माध्यम ही है।

3. दृश्य-श्रव्य माध्यम

दृश्य-श्रव्य माध्यम के ज़रिए न सिर्फ़ कार्यक्रमों को सुना जा सकता है बल्कि घटनाओं के चित्र भी देखे जा सकते हैं और इनसे संबंधित प्रमुख सूचनाओं को पढ़ा भी जा सकता है। टेलीविज़न दृश्य-श्रव्य माध्यम ही है। आप टेलीविज़न तो देखते ही हैं। क्या इस पर प्रसारित होने वाले समाचारों और रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में अंतर बता सकते हैं? दोनों में से किस माध्यम के कार्यक्रम आपको अधिक रोचक लगते हैं। ज़ाहिर है टेलीविज़न के लगते होंगे। क्योंकि इस पर चित्र भी प्रसारित होते हैं। लेकिन क्या आपने कभी यह सोचा है कि टेलीविजन के कार्यक्रमों को क्या आप आँख बंद करके या कोई दूसरा काम करते हुए आनंद उठा सकते हैं? नहीं न! परंतु रेडियो के कार्यक्रमों का आप आनंद उठा सकते हैं। लेकिन टेलीविज़न के कार्यक्रम, समाचार, सूचनाएँ आपको ज़्यादा रोचक इसलिए लगती हैं, आपके मन पर ज़्यादा समय तक अंकित रहती हैं कि इसमें श्रव्य के साथ-साथ विजुअल यानी दृश्य सामग्री भी होती है। कई बार आपने महसूस किया होगा कि जिन बातों को पढ़ या सुन कर आप नहीं समझ पाते उन्हें देख कर आसानी से समझ जाते हैं और वह आपको लंबे समय तक याद भी रहती है। कई बार लिखकर या बोलकर जिन बातों को समझा पाना या अभिव्यक्त कर पाना मुश्किल होता है उन्हें एक चित्र के माध्यम से बहुत आसानी से कहा जा सकता है। टेलीविज़न पर भी ऐसा ही होता है। इसमें समाचारों को बोल कर तो प्रसारित किया ही जाता है, उनसे संबंधित चित्रों को दिखा कर और जहाँ ज़रूरी हुआ लिखित रूप में भी प्रस्तुत कर अधिक प्रभाव पैदा किया जा सकता है। इसी तरह इस पर प्रसारित होने वाले पाठ्यक्रम विषयक कार्यक्रम भी रोचक और प्रभावशाली रूप में तैयार किए जा सकते हैं।

द श्य और श्रव्य गुणों के कारण टेलीविज़न का प्रभाव व्यक्ति के मन पर सीधा पड़ता है।

चित्र 35.2: दूरदर्शन अधिक रोचक

आजकल दूरदर्शन एक महत्त्वपूर्ण संचार माध्यम के रूप में विकसित हो चुका है। जबसे चौबीसों घंटे के कार्यक्रम प्रसारित होने लगे हैं इसके माध्यम से समाज के विविध पक्षों को दिखाने, हर पल की घटनाओं को प्रसारित कर पाने की सुविधा बढ़ी है। अत्याधुनिक उपकरणों के विकास से एक जगह से दूसरी जगह सूचनाएँ भेज पाना आसान हो गया है। अब तो घटना स्थल से भी सीधे आँखों देखा हाल तुरंत प्रसारित किया जा सकता है। इसलिए आप देखते होंगे कि कई बार टेलीविज़न पर किसी भी घटना के तत्काल समाचार आपके सामने होते हैं, किसी दूसरे देश में बैठे व्यक्ति से उस पर टिप्पणी ली और प्रसारित की जा सकती है। सबसे बड़ी बात कि चित्रों को अधिक से अधिक संख्या में प्रसारित किए जाने से सूचनाओं, समाचारों की प्रामाणिकता बढ़ जाती है। इसलिए आज इसके दर्शकों की संख्या दूसरे संचार माध्यमों की तुलना में तेज़ी से बढ़ रही है। इस कारण विभिन्न कंपनियाँ और सरकार भी अपने कार्यक्रमों, नीतियों, योजनाओं का प्रसारण करना, उनके बारे में विज्ञापन के ज़रिए लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाना इस माध्यम के ज़रिए अधिक उचित समझते हैं।

टेलीविज़न के ज्ञानदर्शन चैनल द्वारा पाठ्यसामग्री या पाठ्यक्रम सहायक सामग्री का प्रसारण भी काफ़ी महत्त्वपूर्ण संचार माध्यम के रूप में उभर कर सामने आया है। जैसा कि हम आपको पहले ही बता चुके हैं, पाठ्यक्रमों के प्रसारण के लिए अब एक अलग से एजूसेट नामक उपग्रह भी अंतरिक्ष में स्थापित किया जा चुका है, जिससे विद्यार्थियों, शोधार्थियों यहाँ तक कि अध्यापकों के लिए शिक्षा संबंधी सूचनाएँ प्राप्त करने, दुनिया में चल रहे शिक्षा संबंधी प्रयोगों के बारे में जानने और उनका इस्तेमाल करने में काफ़ी आसानी हो गई है। जिस तरह फिल्म, संगीत, मनोरंजन या समाचारों के अलग-अलग चैनल शुरू हो गए हैं उसी तरह विद्यार्थियों के लिए भी अलग से शिक्षा चैनल शुरू किया जा रहे हैं, जिस पर अलग-अलग समय में अलग-अलग विषयों और कक्षाओं के लिए कार्यक्रमों का प्रसारण होने लगा है। इस चैनल के ज़रिए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान भी अपने विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रमों का प्रसारण करता है।

कभी-कभी टेलीकॉन्फ्रेंसिंग कर विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान भी किया जाता है। टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम समाचार पत्रों और रेडियो की तुलना में अधिक प्रभावी होते हैं। लेकिन इन पर भी प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का समय निर्धारित होता है, इसलिए अगर उस समय पर उन्हें देखना चूक जाएँ तो उनका लाभ उठा पाना संभव नहीं होता।

पाठगत प्रश्न 35.3

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. रेडियो प्रभावी है–

   (क) दृश्य-श्रव्य माध्यम से
   (ख) दृश्य माध्यम से
   (ग) मुद्रित माध्यम से
   (घ) मनोरंजक माध्यम से

टिप्पणी

2. श्रव्य माध्यमों की सूचनाएँ
   (क) ज़्यादा प्रभाव डालती हैं
   (ख) ज़्यादा विस्तार से प्रसारित की जाती हैं
   (ग) मुद्रित माध्यमों की तरह संकलित नहीं की जा सकतीं
   (घ) कभी भी कहीं भी उपयोग की जा सकती हैं

3. दृश्य-श्रव्य माध्यमों के कार्यक्रम
   (क) रोचक और प्रभावशाली होते हैं
   (ख) इनमें लिखित रूप में संदेश देने की गुंजाइश नहीं होती
   (ग) सिर्फ़ चित्र होते हैं
   (घ) कभी भी उपयोग किए जा सकते हैं

35.4 नए संचार माध्यम

आजकल आप अक्सर लोगों से मोबाइल फोन पर बात करते होंगे। अपने दोस्तों को यह भी कहते कई बार सुना होगा कि इंटरनेट के ज़रिए अमुक मुद्दे पर जानकारी ज़्यादा उपलब्ध है। ये दोनों संचार के नए माध्यम के रूप में इन दिनों बहुत तेज़ी से उभरे हैं।

मोबाइल फोन

यह घर के साधारण फोन से कई मामलों में थोड़ा भिन्न है। घर के फोन को एक तार के ज़रिए जोड़ा गया होता है इसलिए इसे उठाकर कहीं भी ले जाना आसान नहीं होता जबकि मोबाइल फोन बिना तार (वायरलेस) के काम करता है, जिसे लेकर आसानी से कहीं भी जाया जा सकता है। इसलिए अब लोगों को फोन जेब में लेकर चलने की सुविधा को देखते हुए इनके सेट काफ़ी छोटे-छोटे तैयार किए जाने लगे हैं। मगर यह एक दूसरे से बातचीत करने के अलावा इसका उपयोग संदेश भेजने-पाने (एस.एम.एस.), फोटो खींचने और तुरंत उसे दूसरे व्यक्ति के पास भेजने, किसी की बातचीत रिकॉर्ड करने और उसे दूसरे के पास भेजने, फिल्में देखने, गाना सुनने, समाचार सुनने के लिए भी किया जाता है। इस तरह समाचार एकत्र करने वाले संवाददाताओं के लिए तो काफ़ी उपयोगी सिद्ध हुआ ही है आम आदमी के लिए भी कई मायनों में कारगर साबित हो रहा है। यह उन फोन सेटों में उपलब्ध होता है जिसमें मल्टी मीडिया डिस्क यानी एम.एम.एस होता है। अब तो ऐसे मोबाइल फ़ोन भी उपलब्ध हैं जिन पर 10 से 20 मिनट की फ़िल्म बनाई जा सके। उसे भेजा जा सके। इसके द्वारा इंटरनेट सर्च इंजन से सूचनाएँ भी प्राप्त की जा सकती हैं संक्षेप में कहें तो इंटरनेट का उपयोग भी मोबाइलफोन पर संभव है। यानीकि दुनिया आपकी मुट्ठी में।

इस फोन की खासियत यह है कि जिस व्यक्ति के पास यह है वह चाहे देश-दुनिया

टिप्पणी

के किसी भी कोने में बैठा हो, चल रहा हो, उससे आसानी से संपर्क किया जा सकता है। इसके अलावा कोई भी व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने से घटना या दृश्य के चित्र खींच कर दूसरे स्थान पर तुरंत भेज सकता है। पहले ऐसा करना काफ़ी मुश्किल काम होता था। पहले कैमरे से चित्र खींचा जाता था, फिर उसका प्रिंट निकाला जाता था, फिर उन्हें भेजा जाता था जिसमें काफ़ी समय लग जाता था। अब चित्र खींचने के बाद तुरंत भेजा जा सकता है। टेलीविज़न पर समाचार प्रसारित करने वाले चैनल तो इसी प्रणाली पर काम करने वाले डिजिटल कैमरों का उपयोग भी करने लगे हैं। डिजिटल कैमरे में साधारण कैमरे की तरह रील डालने की ज़रूरत नहीं होती। कैमरे के भीतर उसकी मेमोरी यानी स्मृति निर्धारित होती है जिसकी क्षमता के मुताबिक कैमरा दृश्य का बिंब कूट भाषा में दर्ज कर लेता है। उस कूट भाषा को जब कंप्यूटर के माध्यम से खोला जाता है तो वह दृश्य दिखाई देने लगता है।

संचार क्रांति के इस युग में मोबाइल फोन सूचनाएँ पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम बन कर उभरा है। विशेष रूप से रेडियो और टेलीविजन पर सूचनाएँ-समाचार भेजने-प्राप्त करने में इससे काफ़ी सुविधा हुई है। पहले सूचना भेजने के लिए फैक्स या टेलीग्राम करना पड़ता था, अब मोबाइल फोन से ही लिखित, वाचिक या चित्र के रूप में सूचनाएँ भेजी जाने लगी हैं। इसके अलावा मोबाइल धारक अगर किसी से बात करने की बजाय लिखित रूप में संदेश भेजना चाहता है तो वह एस.एम.एस. यानी शॉर्ट मेसेज सर्विस का इस्तेमाल कर सकता है। यही नहीं मोबाइल को कंप्यूटर से जोड़कर इंटरनेट सुविधा का भी लाभ उठाया जा सकता है।

कंप्यूटर और इंटरनेट

कंप्यूटर अब किसी के लिए अपरिचित नहीं रह गया है। यह एक ऐसा उपकरण है, जिसके कारण संचार के क्षेत्र में क्रांति आ गई है। इस पर अखबारों, रेडियो, टेलीविज़न के लिए समाचार लिखे जा सकते हैं, संपादित किए जा सकते हैं और प्रकाशित-प्रसारित किए जा सकते हैं। पहले जहाँ अखबारों की डिज़ाइन काट और चिपका कर तैयार की जाती थी अब उसकी ज़रूरत नहीं रह गई है। अब कंप्यूटर पर समाचारों को टाइप कर फोटो स्कैन कर पूरा का पूरा अखबार बहुत कम समय में तैयार किया जाने लगा है। यही नहीं, अखबार के पूरे के पूरे पन्ने को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा और सीधे मशीन पर प्रकाशित किया जा सकता है। जैसा कि आपको हम पहले ही बता चुके हैं अखबारों के प्रकाशन के लिए समय की कमी रहती है इसलिए कंप्यूटर पर अखबारों की डिजाइन की सुविधा उपलब्ध हो जाने से देर रात तक के ताज़ा समाचारों का इंतज़ार कर उनका प्रकाशन कर पाना अब आसान हो गया है। यही नहीं अब रंगीन अखबार का प्रकाशन काफ़ी आसान और सस्ता हो गया है। सुंदर से सुंदर तरीके से इनका प्रकाशन संभव है।

इसी तरह रेडियो और टेलीविज़न पर भी समाचारों और दूसरे कार्यक्रमों को तैयार करने में काफ़ी आसानी हो गई है। जब से टेलीविजन पर समाचार चैनलों की होड़ शुरू हुई है, ताज़ा से ताज़ा समाचारों के प्रसारण की होड़ मच गई है। कंप्यूटर के आ जाने से

टिप्पणी

अब कहीं भी समाचार, चित्रों, सूचनाओं का संकलन करना आसान हो गया है। समाचार संकलन के साथ ही बहुत कम समय में कंप्यूटर के माध्यम से इनका संपादन अ ा ै र निर्धारित समय में प्रसारण आसान हो गया है। देश या दुनिया के किसी भी कोने में बैठा संवाददाता समाचारों का संकलन, संपादन कर अपने मुख्य कार्यालय अथवा प्रसारण केंद्र को इंटरनेट के ज़रिए भेज सकता है, जिसे जस का तस प्रसारण किया जा सकता है। पहले ऐसा कर पाना संभव नहीं था। संवाददाता जो समाचार, सूचना अपने केंद्र को भेजता था उसका संपादन करने में काफ़ी समय लग जाता था, फिर से निर्धारित समय में प्रसारण योग्य बनाने के लिए काफ़ी कतर-ब्योंत करनी पड़ती थी। यही नहीं फिल्म निर्माण में भी कंप्यूटर के आने से बहुत आसानी हो गई है, खासकर उनके संपादन में।

इंटरनेट

इंटरनेट का अर्थ है कंप्यूटरों का जाल। यह जाल स्थानीय स्तर पर भी तैयार किया जा सकता है और राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी। जब कई कंप्यूटरों को सर्वर के ज़रिए जोड़ दिया जाता है तो वे एक जैसे वातावरण में काम करने लगते हैं। इसी तरह जब इन्हें उपग्रह के ज़रिए जोड़ दिया जाता है तो दुनिया भर में कंप्यूटरों का एक जाल तैयार हो जाता है। इंटरनेट सर्वर के ज़रिए जुड़े कंप्यूटरों से कई मायनों में भिन्न होता है। इंटरनेट में कार्यक्रम तैयार कर लिखित या चित्र रूप में टेलीविज़न की तरह प्रसारित किए जाते हैं। जिस तरह आप अलग-अलग चैनल बदल कर टेलीविज़न के अलग-अलग कार्यक्रम देख सकते हैं, उसी तरह इंटरनेट पर साइट लॉग ऑन करके अपनी मनचाही सूचनाएँ इकट्ठी कर सकते हैं। इस तरह इंटरनेट एक प्रकार की समृद्ध लाइब्रेरी है। जिस तरह लाइब्रेरी से मनचाही पुस्तक निकाल कर पढ़ी जा सकती है उसी तरह इंटरनेट की अलग-अलग साइटों से जानकारियाँ हासिल की जा सकती हैं। अगर आपको यह जानकारी नहीं है कि किस विषय पर जानकारी कहाँ, किस साइट पर मिलेगी तो आप सर्च इंजन में अपना विषय टाइप कर इसकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

चित्र 35.3: साइबर केफे पर इंटरनेट का उपयोग

इंटरनेट एक तरह से मुद्रित, दृश्य-श्रव्य माध्यमों का मिला-जुला रूप है। यह न सिर्फ जानकारियाँ इकट्ठी करने का साधन है बल्कि इसके ज़रिए संदेश भी पलक झपकते दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में भेजा जा सकता है। इसके जरिए लोगों से बात की जा सकती है, उनके चित्र प्राप्त किए जा सकते हैं, अनुसंधान किए जा सकते हैं

टिप्पणी

और दुनिया भर में उनका प्रसार किया जा सकता है। अब तो आप इंटरनेट के ज़रिए घर बैठे खरीदारी भी कर सकते हैं, नए-नए मित्र बना सकते हैं। इस तरह इंटरनेट एक त्वरित और बहु उपयोगी संचार माध्यम के रूप में विकसित हुआ है। जहाँ पहले एक फाइल को एक शहर या विभाग से दूसरे विभाग में भिजवाने और वहाँ से कार्यवाही हो कर वापस आने में कई दिन लग जाते थे, अब इंटरनेट के ज़रिए पल भर में यह काम किया जा सकता है। दुनिया के किसी भी कोने में बैठा व्यापारी या व्यवसायी दूसरे व्यवसायी से बातचीत कर इंटरेनट के ज़रिए सौदा तय कर सकता है। सरकार के विभाग दूसरे विभागों से परामर्श कर सकते हैं। एक किसान दुनिया के बाजारों में अपनी फसलों की कीमतों का अध्ययन कर सकता है, नए-नए बीज, खाद, उपकरणों और कृषि योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

अब लाखों की संख्या में इंटरनेट साइट उपलब्ध हैं, जिनमें बहुत सारी निजी कंपनियों द्वारा तैयार की गई हैं तो सरकारी विभागों, निजी संस्थाओं और स्वयंसेवी संगठनों द्वारा भी तैयार की गई हैं। सभी विभिन्न क्षेत्रों की जानकारियाँ, अनुसंधान, अवसर आदि की जानकारियाँ उपलब्ध कराती हैं। आपके राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान की भी एक साइट है, जिसका पता आपकी पुस्तकों के पीछे दिया गया है। इसे लॉग ऑन करके आप यहाँ की गतिविधियों और विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसी तरह दूसरी शिक्षा संस्थाओं की भी साइट हैं। अब तो इंटरनेट के ज़रिए आप नौकरी और रोज़गार के अवसरों की जानकारियाँ भी हासिल कर सकते हैं। यही नहीं कई शैक्षणिक संस्थान तो इंटरनेट के ज़रिए परीक्षाएँ भी आयोजित करने लगे हैं।

इंटरनेट के उपयोग में एक सुविधा यह होती है कि रेडियो, टेलीविज़न या पत्र-पत्रिकाओं की तरह इसके उपयोग के लिए निश्चित समय सीमा का ध्यान रखना ज़रूरी नहीं होता। इसे जब मर्जी खोल कर उपयोग किया जा सकता है। हाँ, यह बाकी संचार माध्यमों की अपेक्षा थोड़ा महँगा अवश्य है। इसके उपयोग के लिए एक कंप्यूटर और एक फोन या इंटरनेट कनेक्शन की ज़रूरत होती है। मगर जिन लोगों के पास ये साधन नहीं हैं वे भी साइबर कैफे में जाकर प्रति घंटे की दर से भुगतान कर इसका उपयोग कर सकते हैं। अब तो छोटे-छोटे कस्बों में भी साइबर कैफे खुल गए हैं। अगर आपने अभी तक इंटरनेट का उपयोग नहीं किया है तो किसी साइबर कैफे में जाकर इसका इस्तेमाल कीजिए और देखिए कि यह कितना रोचक, ज्ञानवर्धक और उपयोगी संचार माध्यम है।

पाठगत प्रश्न 35.4

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. मोबाइल फोन के माध्यम से

   (क) सिर्फ बात की जा सकती है

टिप्पणी

(ख) सिर्फ संदेश भेजा जा सकता है

(ग) लिखित, वाचिक, चित्र रूप में सूचनाओं का आदान-प्रदान संभव है।

(घ) सूचनाएँ भेजना कठिन प्रक्रिया है

2. निम्नलिखित में से गलत कथन छाँटिए:

(क) इंटरनेट का इस्तेमाल सहज नहीं है

(ख) इंटरनेट के ज़रिए दुनिया भर में त्वरित रूप से सूचनाओं-संदेशों का आदान-प्रदान किया जा सकता है

(ग) मोबाइल फोन इंटरनेट का भी काम कर सकता है

(घ) इंटरनेट पर दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों का लाभ भी उठाया जा सकता

35.5 आपने क्या सीखा

- संचार माध्यमों के ज़रिए देश-विदेश की विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी सूचनाएँ और जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।
- ये न सिर्फ़ समाचारों का सशक्त माध्यम होते हैं बल्कि लोगों को जागरूक बनाने का भी काम करते हैं इसीलिए इन्हें लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है।
- ये मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं–मुद्रित, श्रव्य और दृश्य-श्रव्य।
- मुद्रित माध्यमों के अंतर्गत अखबार और पत्रिकाएँ आती हैं।
- रेडियो और टेपरिकॉर्डर श्रव्य माध्यम हैं।
- टेलीविज़न दृश्य-श्रव्य माध्यम हैं।
- इंटरनेट मुद्रित, श्रव्य और दृश्य-श्रव्य माध्यम का मिला-जुला रूप है।
- अखबारों में हर दिन नए समाचार होते हैं इसलिए इनकी आयु एक दिन की होती है जबकि पत्रिकाएँ सावधिक होती हैं और इनमें मुख्य रूप से समाचारों के विश्लेषण छपते हैं इसलिए इनकी आयु अखबारों की अपेक्षा अधिक होती है।
- श्रव्य और दृश्य-श्रव्य माध्यमों की सूचनाएँ-कार्यक्रमों का प्रसारण निश्चित अवधि में होता है इसलिए इनके प्रसारण का लाभ उठाने के लिए उस समय का ध्यान रखना आवश्यक होता है।
- अखबारों-पत्रिकाओं की सूचनाओं-समाचारों को काट कर सहेज कर रखा जा सकता है जबकि रेडियो या टेलीविज़न के कार्यक्रमों को ऐसा कर पाना कठिन है।
- मोबाइल और इंटरनेट सूचनाओं के त्वरित आदान-प्रदान और संकलन के मामले में सबसे तेज़ संचार माध्यम हैं।

टिप्पणी

35.6 योग्यता विस्तार

- उपलब्ध समाचार पत्र के विभिन्न पहलुओं और स्तंभों का सूचीकरण कीजिए।
- अपने शहर के निम्नलिखित स्थानों का संदर्शन कीजिए और विविध क्रियाकलापों की ज्ञान वृद्धि कीजिए:

  आकाशवाणी भवन, दूरदर्शन केंद्र।
- रेडिया, दूरदर्शन तथा अन्य समाचार चैनलों से प्रसारित खबरों में अंतर की सूची बनाइए।

35.7 पाठांत प्रश्न

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए:

1. मीडिया से आपका क्या तात्पर्य है? यह किस प्रकार लोगों को जागरूक बनाने में उपयोगी है।
2. मुद्रित और दृश्य-श्रव्य माध्यमों की सूचनाओं की प्रकृति में क्या अंतर होता है?
3. एजूसेट की क्या उपयोगिता है?
4. इंटरनेट की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
5. सूचनाओं के आदान-प्रदान में मोबाइल फोन की भूमिका पर टिप्पणी लिखिए।
6. मीडिया सामाजिक बदलाव में किस तरह से भूमिका निभाता है।
7. क्या आप नारी अधिकार, महिला सशक्तिकरण के पक्षधर हैं? अपनी बात को जन-जन तक कैसे पहुँचाएंगे? ऐसे में आपकी मीडिया से क्या अपेक्षाएँ हैं? लिखिए।
8. लिंग भेद, किशोर-किशोरियों की समस्याओं और यौन उत्पीड़न के किस्से आप आए दिन सुनते रहते हैं। क्या आपको लगता है संचार माध्यम इन्हें बढ़ावा दे रहे हैं या फिर इन पर काबू पाने में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। तर्क सहित उत्तर की पुष्टि कीजिए।

35.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

35.1 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग)

35.2 1. (ख), (ग), (घ) 2. (घ)

35.3 1. (ग) 2. (ग) 3. (क)

35.4 1. (ग) 2. (क)